7- Theory of Perspective

अन्तराल तथा रूप व्यवस्था — वस्तु आकृति जितना स्थान घेरती है वह उसका आयतन होता है; और चित्र में आकृतियों के परिणाम के आधार पर परस्पर सम्बन्ध होता है। चित्र भूमि द्विआयामी होता है और यथार्थ जगत में वस्तुएँ त्रिआयामी होते हैं। अतः चित्रभूमि पर केवल दृष्टि भ्रम उत्पन्न करने के लिए त्रिआयामी चित्र का सृजन करते हैं।

चित्रभूमि पर यह प्रभाव वास्तव में उसको विभाजित करके ही प्राप्त किया जा सकता है जिसके विधि निम्न प्रकार है।

(1) अतिव्यादित तल (overlapping Planes) — इस विधि द्वारा आकारों के मध्य दूरी का आभास होता है जो तल सर्वाधिक निकट होगा वह अतिव्यादित तल नहीं होगा अन्य शेष तल अतिव्यादित हो सकते हैं।

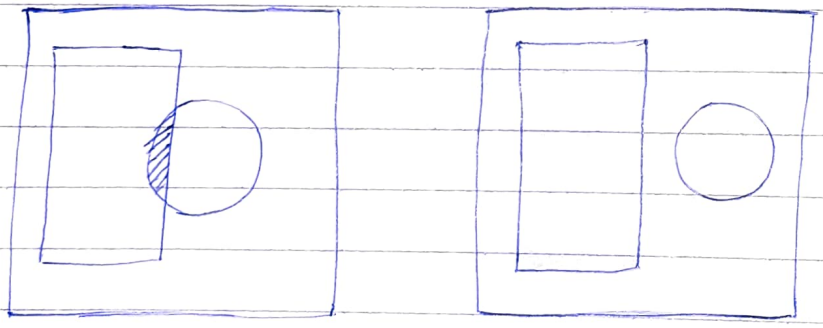

(2) आकार में भिन्नता — आधार तल पर आकार को छोटा बड़ा करके भी अन्तराल में व्यवस्थित किया जाता है जैसे — अजन्ता के ~~चित्र~~ गुफा में माता तथा पुत्र वाले चित्र में बुद्ध को आकार में विशाल दिखाकर उसकी वरीयता व ज्ञान का प्रदर्शन किया है।

(3) आकार में स्थिति — चित्र भूमि पर आकृति को विभिन्न स्थान देखकर दूरी का आभास उत्पन्न किया जा सकता है।

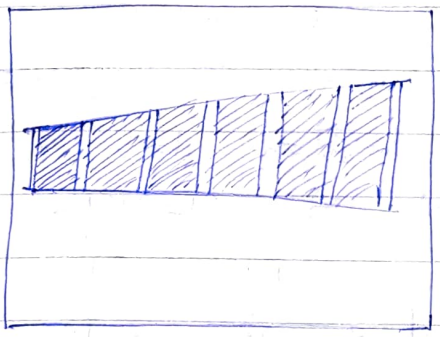

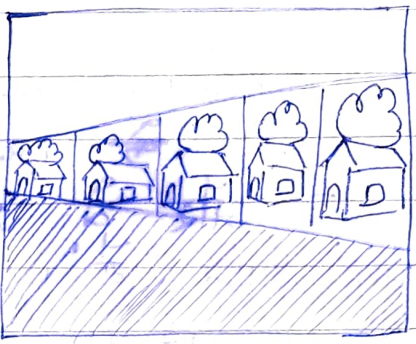

(4) रेखिय क्षय वृद्धि — (Linear Perspective) — जो आकार क्षितिज रेखा के जितने निकट होगा वह उतना ही छोटा और ओझल बिन्दु (दिखाई न देने वाला) पर जाकर उसका अस्तित्व समाप्त होता जाता प्रतित होता है।

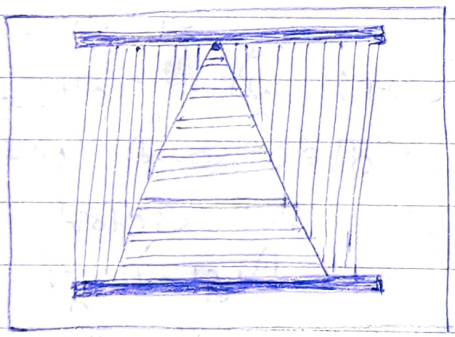

(5) वातावरणीय क्षय वृद्धि (Areal Perspective)— जब भी हम चित्र में किसी भी रेल की पटरी, सड़क आदि को दिखाते हैं या बनाते है तो ~~उस~~ उसमें निकट का आकार स्पष्ट तथा प्रखर वर्ण तथा दूर के tone में दिखायी देता है इस सिद्धान्त का प्रयोग दूरी प्रकट करने में लाया जाता है।